ULMA PAR ETIRAZ MANA HE (HINDI)

उ़लमा के मर्तबे से रू शनास करवाने और इन की तौहीन से बचाने वाली मुनफ़रिद तह़रीर

उ़लमा पर ए'तिराज़ मन्अ़ है

-: पेशकश :-

मर्कज़ी मजलिसे शूरा

(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(مُسْتَطْرَف ج ۱ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

(अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये)

तालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़ व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी इस इल्म पर अ़मल न किया) (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

www.dawateislami.net

उ़लमा पर ए'तिराज़ मन्अ़ है

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** ने येह रिसाला "उर्दू" ज़बान में पेश किया है और **मजलिसे तराजिम** ने इस रिसाले का **"हिन्दी"** रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** (TRANSLATION) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (TRANSLITERATION) या'नी ज़बान तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि **हिन्दी** रखी है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए Sms, E-mail या Whats App) **मुत्त़लअ़** फ़रमा कर सवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी (रस्मुल ख़त़) का लीपियांतर चार्ट

त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا	
झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ	
ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح	
ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ	
अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س
ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق	फ़ = ف	ग़ = غ	' = ء
य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل	घ = گھ
् = ْ	ु = ُ	ि = ِ	- = َ	ी = ئ	ू = وُ	ा = آ

-: राबित़ा :-

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर, नागर वाड़ा मेन रोड,

बरोडा, गुजरात, अल हिन्द, ☎ 09327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

उ़लमा पर ए'तिराज़ मन्अ़ है (1)

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 400 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **'पर्दे के बारे में सुवाल जवाब'** सफ़ह़ा 1 पर है : ह़ज़रते उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की, कि मैं (सारे विर्द, वज़ीफ़े, दुआ़एं छोड़ दूंगा और) अपना सारा वक़्त दुरूद ख़्वानी में सर्फ़ करूंगा । तो सरकारे मदीना, صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "येह तुम्हारी फ़िक्रों को दूर करने के लिये काफ़ी होगा और तुम्हारे गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे ।"(2)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

---

1 ...मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी व निगराने मर्कज़ी मजलिसे शूरा ह़ज़रते मौलाना ह़ाजी अबू ह़ामिद मुह़म्मद इमरान अ़त्तारी مُدَّ ظِلُّہُ الْعَالِی ने येह बयान 26 रबीउ़ल अव्वल सिने 1432 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 2 मार्च सिने 2011 ईसवी बरोज़ बुध आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची में फ़रमाया । ज़रूरी तरमीम व इज़ाफ़े के बा'द 10 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र सिने 1435 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 14 दिसम्बर सिने 2013 ईसवी को तह़रीरी सूरत में पेश किया जा रहा है ।

(शो'बए रसाइले दा'वते इस्लामी, **मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या**)

2.... ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ والرقائق والورع، ۲۳ باب، ۴/۲۰۷، حدیث: ۲۴۶۵

www.dawateislami.net

ईसाइया का बेटा

तख़्ते कुस्त़नति़निय्या पर एक ईसाइया औ़रत हुक्मरान थी और वोह हर साल ख़िराज[1] अदा करती। जब वोह मर गई तो उस का बेटा तख़्त पर बैठा और ख़िराज ह़ाज़िर न किया। उधर से ख़िराज का मुत़ालबा हुवा तो उस ने ह़ज़रते हारून रशीद की ख़िदमत में एक एलची (क़ासिद) के हाथ इस मज़मून की तह़रीर भेजी की "वोह मर गई जो खुद प्यादा बनी थी और आप को रुख़ बनाया था" (या'नी मेरी मां जिस ने आप की बाला दस्ती क़बूल की थी वोह मर चुकी है। अब मेरे साथ आप का कोई मुआ़मला नहीं है) येह तह़रीर ले कर एलची जब ह़ाज़िरे दरबार हुवा, वज़ीर को हुक्म हुवा : "सुनाओ !" वज़ीर ने उसे देख कर अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! मुझ में ताब नहीं जो इसे सुना सकूं।" फ़रमाया : "ला मुझे दे।" और उस तह़रीर को पढ़ा, बादशाह को देखते ही ऐसा जलाल आया जिसे देख कर तमाम दरबार भाग गया, सिर्फ़ वज़ीर और वोह एलची रह गए। वज़ीर को हुक्म हुवा कि जवाब लिख ! उस ने लिखने का इरादा किया मगर रो'बे शाही इस क़दर ग़ालिब था कि हाथ थर थराने लगा और क़लम न चला। फिर फ़रमाया : ला मुझे दे। और यूं लिखा : "येह ख़त़ है खुदा के बन्दे अमीरुल मोअमिनीन हारून रशीद की त़रफ़ से रूम के कुत्ते फुलां को कि ओ काफ़िरा के जने ! जवाब वोह नहीं जो तू सुने जवाब वोह है जो तू देखेगा।" येह फ़रमान एलची को दिया और फ़ौरन लश्कर को तय्यारी का हुक्म दिया। एलची के साथ लश्कर ले कर पहुंचे और जाते ही कुस्त़नति़निय्या को फ़त्ह़ कर के उस ईसाई बादशाह को गिरिफ़्तार कर लिया। उस ने बहुत गिर्या व ज़ारी की, हाथ पाउं जोड़े, ख़िराज देने

1.....ज़मीन का टेक्स जो ज़िम्मियों से लिया जाता था। (الموسوعة الفقهية، ۱۹/۵۲)

www.dawateislami.net

का वा'दा किया (तो आप ने उसे) छोड़ दिया और ताज बख़्शी कर के वापस आए। अभी एक मन्ज़िल आए थे कि ख़बर पाई, उस ने फिर सरताबी की। फ़ौरन वापस गए और फिर फ़त्ह़ किया और फिर उसे गिरिफ़्तार किया फिर उस ने हाथ जोड़े और ख़ुशामद की फिर छोड़ दिया।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा ह़िकायत से अमीरुल मोअमिनीन ख़लीफ़ा हारून रशीद के रो'ब व दबदबे का ब ख़ूबी अन्दाज़ा होता है कि जब नक़्फ़ूर नामी रूम के ईसाई तख़्त नशीन ने एक मक्तूब (ख़त़) के ज़रीए ख़िराज देने से इन्कार किया तो हारून रशीद किस क़दर आग बगूला हुवा कि न सिर्फ़ इन्तिहाई सख़्त अल्फ़ाज़ में उसे ख़त़ का जवाब लिखा बल्कि उसे सबक़ सिखाने के लिये हाथों हाथ रूम पर फ़ौज कशी भी की, मगर येही हारून रशीद आ़म लोगों के ह़क़ में जिस क़दर सख़्त मिज़ाज और क़ह्रो ग़ज़ब वाले थे उ़लमाए दीने मतीन के मुआ़मले में उसी क़दर नर्म मिज़ाज और इन का अदब बजा लाने वाले थे। आइये ! उ़लमा की ता'ज़ीम अपने दिल में पैदा करने के लिये एह़तिरामे उ़लमा से मुतअ़ल्लिक़ हारून रशीद के किरदार के चन्द गोशों को मुलाह़ज़ा कीजिये। चुनान्चे, मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत में है :

ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ ने दो हाथ किस लिये दिये हैं !

हारून रशीद जैसे जब्बार बादशाह ने (अपने बेटे) मामून रशीद की ता'लीम के लिये ह़ज़रते इमाम किसाई (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه)[2] से अ़र्ज़ किया तो आप ने फ़रमाया : "मैं यहां पढ़ाने न आऊंगा, शहज़ादा मेरे ही

1... मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 145

2 .... येह इमाम मुह़म्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد के ख़ालाज़ाद भाई और अजिल्लए उ़लमाए कुर्राए सबआ़ में से हैं।

www.dawateislami.net

मकान पर आ जाया करे ।" हारून रशीद ने अ़र्ज़ की : "वोह वहीं ह़ाज़िर हो जाया करेगा मगर उस का सबक़ पहले हो ।" फ़रमाया : "येह भी न होगा बल्कि जो पहले आएगा उस का सबक़ पहले होगा ।" ग़रज़ मामून रशीद ने पढ़ना शुरूअ़ किया, इत्तिफ़ाक़न एक रोज़ हारून रशीद का गुज़र हुवा, देखा कि इमाम किसाई (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) अपने पाउं धो रहे हैं और मामून रशीद पानी डालता है । बादशाह ग़ज़ब नाक हो कर उतरा और मामून रशीद के कोड़ा मारा और कहा : "ओ बे अदब ! ख़ुदा ने दो हाथ किस लिये दिये हैं, एक हाथ से पानी डाल और दूसरे हाथ से इन का पाउं धो ।"[1]

سُبْحٰنَ اللهعَزَّوَجَلَّ देखा आप ने कि इन्तिहाई शानो शौकत और रो'ब व दब दबा रखने वाले ख़िलाफ़ते अ़ब्बासिय्या के पांचवें ख़लीफ़ा हारून रशीद ने जब अपने बेटे को देखा कि उस्ताद साहिब के पाउं धुलवाने के लिये पानी डाल रहा है तो इस बात पर ग़ुस्सा नहीं आया कि "वक़्त के बादशाह का बेटा किसी के पाउं धुलवा रहा है !" बल्कि ग़ुस्सा आया भी तो इस बात पर कि मेरा बेटा आ़लिमे दीन को पाउं धोने की ज़ह़मत क्यूं दे रहा है ? ख़ुद अपने हाथ से इन के पाउं धोने की सआ़दत क्यूं ह़ासिल नहीं कर रहा ?

इ़ल्म की इ़ज़्ज़त

एक मरतबा हारून रशीद ने अबू मुआ़विय्या अ़ज़ीज (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَزِيْز) की दा'वत की, वोह आंखों से मा'ज़ूर थे, जब आफ़्ताबा (या'नी ढकने

1... मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 144

www.dawateislami.net

दार, दस्ता लगा हुवा लौटा) और चिलमची (या'नी हाथ मुंह धोने का बरतन) हाथ धोने के लिये लाई गई तो चिलमची ख़िदमत गार को दी और आफ़्ताबा ख़ुद ले कर उन के हाथ धुलाए और कहा : "आप ने जाना कौन आप के हाथों पर पानी डाल रहा है ?" कहा : "नहीं ।" कहा : "हारून ।" (तो ह़ज़रते अबू मुआ़विय्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उन्हें दुआ़ देते हुवे) कहा : "जैसी आप ने इ़ल्म की इ़ज़्ज़त की ऐसी **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) आप की इ़ज़्ज़त करे ।" हारून रशीद ने कहा : "इसी दुआ़ के ह़ासिल करने के लिये येह किया था ।"[1]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तारीख़ की किताबों में हारून रशीद के बारे में लिखा है कि रोज़ाना सो रक्अ़त नफ़्ल नमाज़ पढ़ना मरते दम तक आप के मा'मूलात में शामिल रहा अलबत्ता कभी कभार बीमारी की वजह से नाग़ा हो जाता नीज़ ज़कात के इ़लावा रोज़ाना हज़ार दिरहम अपने पल्ले से ख़ैरात करते (उ़लमा व फ़ुक़हा से महब्बत का येह आ़लम था कि) जब ह़ज करने जाते तो 100 फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام और इन के साहिब ज़ादे आप के हमराह जाते और जिस साल ह़ज को न जाते तो तीन सो आदमियों को अपने ख़र्च से ह़ज करवाते थे ।[2]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़लीफ़ा हारून रशीद न सिर्फ़ उ़लमा व फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की ता'ज़ीम किया करते बल्कि

1... मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 145

2... الكامل في التاريخ، ثم دخلت سنة ثلاث وتسعين ومائة، ٥/٣٥٦

www.dawateislami.net

उमूरे सल्त़नत और अपने दीगर दीनी व दुन्यवी मुआ़मलात में भी उ़लमा व फ़ुक़हा की राए को फ़ौक़िय्यत देते, इन की बात को ह़र्फ़े आख़िर समझते, आख़िरत की बेहतरी के लिये इन से नसीह़त त़लब करते, बसा अवक़ात नसीह़त ह़ासिल करने उ़लमा के दरवाज़े तक ख़ुद ह़ाज़िर होते और अगर उ़लमाए किराम दरबार में तशरीफ़ ले आते तो शाहाना शानो शौकत और रो'बे सल्त़नत की परवा किये बिग़ैर इन के ए'ज़ाज़ में खड़े हो जाया करते थे। जैसा कि मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत में है :

उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का एह़तिराम

हारून रशीद के दरबार में जब कोई आ़लिम तशरीफ़ लाते बादशाह उन की ता'ज़ीम के लिये खड़ा होता। एक बार दरबारियों ने अ़र्ज़ की : "या अमीरल मोअमिनीन ! रो'बे सल्त़नत जाता है।" जवाब दिया : **"अगर उ़लमाए दीन की ता'ज़ीम से रो'बे सल्त़नत जाता है तो जाने ही के क़ाबिल है।"** (1)

ज़रा सोचिये ! आख़िर क्या वजह थी जो हारून रशीद जैसे अ़ज़ीम बादशाह उ़लमाए किराम का इस क़दर लिह़ाज़ किया करते थे....? यक़ीनन इस की वजह येह थी कि वोह उ़लमा के मक़ामो मर्तबे और मुआ़शरे में इन की ज़रूरत व अहम्मिय्यत को समझते थे और इस बात से ब ख़ूबी वाक़िफ़ थे कि इस लहलहाते गुलशने इस्लाम को आबाद रखने में इन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या का क्या किरदार है।

1... मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 145

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आज भी ऐसे सलीमुल फ़ित्रत अफ़राद मौजूद हैं जो उ़लमाए किराम की निहायत ता'ज़ीम करते हैं बल्कि बत़ौरे अदब उन की जूतियां उठाना अपने लिये क़ाबिले ए'ज़ाज़ समझते हैं मगर अफ़्सोस ! मुआ़शरे में कुछ ऐसे बद नसीब और मह्रूम लोग भी पाए जाते हैं जो उम्मत के इन मोह़सिन व ख़ैर ख़्वाह ह़ज़रात को अपनी तन्क़ीद का निशाना बना कर इन पर बेजा ए'तिराज़ और नाह़क़ त़ा'न व तश्नीअ़ करते नज़र आते हैं लिहाज़ा ज़रूरी है कि दीने इस्लाम के लिये सुतून की ह़ैसिय्यत रखने वाले इस त़बक़ए उ़लमा से मुतअ़ल्लिक़ क़ुरआनो ह़दीस और बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِين के अक़्वाल से कुछ मदनी फूल बयान किये जाएं ताकि हमारे दिल में उ़लमा की मह़ब्बत व चाहत और क़द्रो मन्ज़िलत मज़ीद बढ़ जाए और जो लोग उ़लमा के मक़ामो मर्तबे से ना वाक़िफ़ हैं उन के दिल में भी उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की अहम्मिय्यत उजागर हो और वोह ह़ज़रात भी इन की क़द्र करने में कामयाब हो जाएं क्यूंकि इन की क़द्रो मन्ज़िलत को पहचानते हुवे इन का अदबो एह़तिराम करने, इन पर ए'तिराज़ करने से बचने और दीनो दुन्या के मुआ़मलात में इन से रहनुमाई ह़ासिल करने में दोनों जहान की भलाइयां हैं।

दीन के रहनुमा

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

فَسْـَٔلُوْۤا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۴۳﴾ (پ۱۴، النحل:۴۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो ऐ लोगो ! इ़ल्म वालों से पूछो अगर तुम्हें इ़ल्म नहीं।

www.dawateislami.net

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस आयते करीमा की तफ़्सीर में लिखते हैं : "ह़दीस शरीफ़ में है बीमारिये जह्ल की शिफ़ा **उ़लमा से दरयाफ़्त करना** है।"

आयते करीमा और इस की तफ़्सीर से उ़लमा का मक़ामो मर्तबा मा'लूम होता है क्यूंकि लोगों के मसाइल ह़ल करने के लिये इन मुबारक हस्तियों को मरजए ख़लाइक़ और दीन के अ़ज़ीम रहनुमा की ह़ैसिय्यत दी गई है तफ़्सीर की मुतअ़द्दिद किताबों में लिखा है कि इस आयते करीमा में इशारा है कि जो मसाइल मा'लूम न हों उन के लिये उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की बारगाह में ह़ाज़िर होना वाजिब है।[1] आइये अपने दिल में उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की मह़ब्बत पैदा करने के लिये 7 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा कीजिये।

उ़लमा की शान में 7 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

1. आ़लिम ज़मीन में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की दलील व हुज्जत है तो जिस ने आ़लिम में ऐ़ब निकाला वोह हलाक हो गया।[2]

2. बेशक ज़मीन पर उ़लमा की मिसाल उन सितारों की त़रह़ है जिन से काइनात की तारीकियों में रहनुमाई ह़ासिल की जाती है तो जब सितारे मांद पड़ जाएं तो क़रीब है कि हिदायत याफ़्ता लोग गुमराह हो जाएं।"[3]

1...روح البیان، پ۱۴، النحل، تحت الآیۃ: ۴۳، ۵/ ۳۷

2...جامع صغیر، ص ۳۴۹، حدیث: ۵۶۵۸

3...مسند امام احمد، مسند انس بن مالک، ۴/ ۳۱۴، حدیث: ۱۲۶۰۰

www.dawateislami.net

3. इल्म के साथ थोड़ा अ़मल भी नफ़्अ़ देता है लेकिन जहालत के साथ बहुत अ़मल भी नफ़्अ़ नहीं देता।[1]

4. اَلْعِلْمُ حَيَاةُ الْاِسْلَامِ وَعِمَادُ الْاِيْمَانِ इल्म इस्लाम की ज़िन्दगी और दीन का सुतून है।[2]

5. مَنْ طَلَبَ الْعِلْمَ تَكَفَّلَ اللّٰهُ بِرِزْقِهٖ जो शख़्स इल्म की त़लब में रहता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के रिज़्क़ का ज़ामिन है।[3]

6. مَنْ سَلَكَ طَرِيْقًا يَلْتَمِسُ فِيْهِ عِلْمًا سَهَّلَ اللّٰهُ لَهٗ بِهٖ طَرِيْقًا اِلَى الْجَنَّةِ जो ऐसे रास्ते पर चले जिस में इल्म को तलाश करे, इस के सबब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत का रास्ता आसान फ़रमा देता है।[4]

7. उ़लमा अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के वारिस हैं, बेशक अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام दिरहमो दीनार का वारिस नहीं बनाते बल्कि वोह तो इल्म का वारिस बनाते हैं, लिहाज़ा जिस ने इल्म ह़ासिल किया उस ने अपना ह़िस्सा ले लिया और आ़लिमे दीन की मौत एक ऐसी आफ़त है जिस का इज़ाला नहीं हो सकता और एक ऐसा ख़ला है जिसे पुर नहीं किया जा सकता (गोया कि) वोह एक सितारा था जो मांद पड़ गया, एक क़बीले की मौत एक आ़लिम की मौत के मुक़ाबले में निहायत मा'मूली है।"[5]

1...جامع بیان العلم، ص ۶۵، حدیث: ۱۹۷

2...جمع الجوامع، ۵/۲۰۰، حدیث: ۱۴۵۱۸

3...تاریخ بغداد، محمد بن القاسم بن ہشام، ۳/۳۹۸

4...مسلم، کتاب الذکر والدعاء...الخ، باب فضل الاجتماع...الخ، ص ۱۴۴۸، حدیث: ۲۶۹۹

5...شعب الایمان، باب فی طلب العلم، ۲/۲۶۳، حدیث: ۱۶۹۹

www.dawateislami.net

इ़ल्म के फ़ज़ाइल और इस से महरूमी के नुक़्सान के बारे में बुज़ुर्गाने दीन के 4 फ़रामीन

1. शैख़ुल इस्लाम, इमाम बुरहानुल इस्लाम, इब्राहीम ज़रनूजी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی तह़रीर फ़रमाते हैं : ''इ़ल्म को इस वजह से शराफ़त व अ़ज़मत ह़ासिल है कि इ़ल्म, तक़्वा तक पहुंचने का वसीला है जिस के सबब बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर बुज़ुर्गी और अबदी सआ़दत का मुस्तह़िक़ हो जाता है।''[1]

2. करोड़ो ह़नफ़िय्यों के पेशवा ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से किसी ने सुवाल किया कि आप इस बुलन्द मक़ाम पर कैसे पहुंचे ? आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इरशाद फ़रमाया : ''मैं ने (अपने इ़ल्म से) दूसरों को फ़ाइदा पहुंचाने में बुख़्ल नहीं किया और दूसरों से इस्तिफ़ादा करने (सीखने) में शर्म नहीं की।''[2]

3. औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام का इरशाद है :

''طُوْفِی بے عِلْم مَسْخَرَۂ شَیطَان اَسْت'' या'नी बे इ़ल्म सूफ़ी शैत़ान का मस्ख़रा है।[3]

1...تعلیم المتعلم طریق التعلم، ص۶

2...درمختار، المقدمة، ۱/۱۲۷

3 ....फ़तावा रज़विय्या, 24/132

www.dawateislami.net

4. आ'ला ह़ज़रत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "बे इल्म मुजाहदा वालों को शैत़ान उंगलियों पर नचाता है, मुंह में लगाम, नाक में नकील डाल कर जिधर चाहे खींचे फिरता है।"[1] नीज़ इरशाद फ़रमाते हैं : "उ़लमाए शरीअ़त की ह़ाजत हर मुसलमान को हर आन है।"[2]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام वारिसे अम्बिया हैं क्यूंकि येह ह़ज़रात अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام की मीरास या'नी इल्मे दीन को ह़ासिल करते और इस के ज़रीए लोगों की रहनुमाई करते हैं लेकिन बद क़िस्मती से आज कल शायद किसी सोचे समझे मन्सूबे के तह़्त उम्मते मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام से दूर किया जा रहा है, इन के मक़ामो मर्तबे को मुसलमानों के दिलो दिमाग़ से निकाला जा रहा है, इन की शान में लब कुशाई की जा रही है, इन पर ए'तिराज़ और त़ा'न व तन्क़ीद करने पर उभारा जा रहा है बल्कि अब तो مَعَاذَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ उ़लमा की तौहीन व तह़क़ीर तक नौबत आ पहुंची है। जो कि ईमान की बरबादी का सबब बन सकती है। यूं भी जो उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का गुस्ताख़ होगा वोह इन की सोह़बत व फ़ैज़ से मह़रूम हो जाएगा और जब येह दोनों चीज़ें नसीब न होंगी तो शरई रहनुमाई ह़ासिल होना भी ना मुमकिन, लिहाज़ा बे अ़मलियां करते करते ऐसों का कुफ़्र तक जा पड़ना भी ऐन मुमकिन है।

1....फ़तावा रज़विय्या, 21/528

2....फ़तावा रज़विय्या, 21/535

www.dawateislami.net

आ'ला ह़ज़रत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "जाहिल ब वजहे जह्ल अपनी इ़बादत में सो गुनाह कर लेता है और मुसीबत येह (है) कि इन्हें गुनाह भी नहीं जानता और आ़लिमे दीन अपने गुनाह में वोह हिस्सा ख़ौफ़ो नदामत का रखता है कि (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ) इसे जल्द नजात बख़्शता है।"(1)

एक और मक़ाम पर फ़रमाते हैं : "इस (आ़लिम) की ख़तागीरी (भूल निकालना) और **इस पर ए'तिराज़ ह़राम है** और इस के सबब रहनुमाए दीन से किनारा कश होना और इस्तिफ़ादए मसाइल (मसाइल में रहनुमाई लेना) छोड़ देना इस के ह़क़ में ज़ह्र है।"(2)

लम्ह़ए फ़िक्रिय्या !

ज़रा सोचिये ! सन्जीदगी से ग़ौर कीजिये !! कि जो मुक़द्दस हस्तिया हमें क़ुरआनो अह़ादीस के मा'ना व मफ़्हूम समझाएं...., नमाज़, रोज़े, ह़ज, ज़कात वग़ैरा इ़बादात के त़रीक़े सिखाएं..., इन इ़बादात में ग़लती हो जाने पर इस का ह़ल इरशाद फ़रमाएं...., मां-बाप का अदब व ता'ज़ीम नीज़ रिश्तेदारों और आ़म मुसलमानों के ह़ुक़ूक़ बताएं..., हमारे हां फ़ौतगी हो जाए तो तजहीज़ो तक्फ़ीन के मसाइल से हमें आगाह करें और मय्यित के मतरूका माल को शरीअ़त के मुत़ाबिक़ वुरसा में तक़्सीम करने पर रहनुमाई फ़रमाएं..., मियां-बीवी में इख़्तिलाफ़ की सूरत में इन के दरमियान फ़ैसला करवाएं...,

---

1....फ़तावा रज़विय्या, 23/687

2....फ़तावा रज़विय्या, 23/711

www.dawateislami.net

हमारी तिजारती व कारोबारी उलझनें सुलझाएं और इस के इ़लावा दीनो दुन्या के बे शुमार मराहि़ल में हमारे साथ ख़ैर ख़्वाही कर के हमें अ़ज़ाबे आख़िरत से बचने के त़रीक़े बताएं, क्या हम अपने इन मोह़सिनों का शुक्रिय्या अदा करने और इन का अदब करने के बजाए इन्हें त़ा'न व तन्क़ीद का निशाना बना कर अपनी आख़िरत दाव पर लगाएंगे ? याद रखिये ! किसी के एह़सान व भलाई करने पर उस का शुक्रिय्या अदा न करना बड़ी मह़रूमी की बात है जब कि शुक्रिय्या अदा करना एह़सान का बदला चुकाने की त़रह़ है। आइये मोह़सिन का शुक्रिय्या अदा करने के बारे में दो फ़रामैने मुस्त़फा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुनते हैं :

शुक्रिय्या के मुतअ़ल्लिक़ 2 फ़रामैने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

1. مَنْ لَمْ يَشْكُرِ النَّاسَ لَمْ يَشْكُرِ اللهَ जो लोगों का शुक्र अदा न करे वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र गुज़ार नहीं।[1]

2. जो तुम्हारे साथ भलाई करे तो उस का बदला चुका दो और अगर (बदले की चीज़) न पाओ तो उस के लिये दुआ़ करो ह़त्ता कि तुम्हें इत़मीनान हो जाए कि तुम ने उस (के एह़सान) का बदला चुका दिया।[2]

दुन्यवी मोह़सिन का तो शुक्रिय्या लेकीन...

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किस क़दर अफ़्सोस की बात है कि अगर कोई शख़्स हमें दुन्यवी क़ानून से ख़बरदार या किसी ख़त़रे से

1...ترمذی، کتاب البر و الصلة، باب ما جاء فی الشکر...الخ، ۳/۳۸۴، حدیث: ۱۹۶۲

2...نسائی، کتاب الزکاة، باب من سأل بالله، ص ۴۲۲، حدیث: ۲۵۶۴

www.dawateislami.net

आगाह करे तो हम न सिर्फ़ उस की बात मानते हैं बल्कि उस का शुक्रिय्या भी अदा करते हैं लेकिन एक आ़लिमे दीन और मुफ़्तिये इस्लाम हमारी शरई रहनुमाई करे तो हम हुक्मे शरीअ़त से रूगर्दानी करते हुवे उस आ़लिमे दीन पर ए'तिराज़ करने लगते हैं । ह़ालांकि आ़लिमे दीन इस बात का ज़ियादा मुस्तह़िक़ है कि उस की बात मानी जाए क्यूंकि जिस शख़्स ने हमें येह बताया कि आप ग़लत़ रास्ते (Wrong Way) पर आ गए हैं या जिस त़रफ़ आप जा रहे हैं वहां ह़ालात ठीक नहीं वोह तो सिर्फ़ हमें दुन्यवी परेशानियों से बचा रहा है जब कि आ़लिमे दीन और मुफ़्तिये इस्लाम हमें आख़िरत की तक्लीफ़ और जहन्नम के रास्ते से बचने की तम्बीह फ़रमाते हैं लिहाज़ा हमें इन का शुक्र गुज़ार होना चाहिये और हरगिज़ हरगिज़ इन की शान में ज़बान दराज़ी या इन के क़ौलो फ़े'ल पर ए'तिराज़ नहीं करना चाहिये ।

आ'ला ह़ज़रत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ में एक सुवाल के जवाब में ज़िम्नन उ़लमा के बारे में अ़वाम के लिये और अ़वाम के बारे में उ़लमा के लिये इन्तिहाई अहम मदनी फूल अ़त़ा फ़रमाए हैं आइये आप भी मुलाह़ज़ा कीजिये ।

उ़लमा से मुतअ़ल्लिक़ एक फ़तवा

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन इस मस्अले में कि अगर कोई आ़लिम या और कोई शख़्स मस्जिद में सोए और मस्नद तकया मस्जिद में अन्दर मस्जिद के लगाए और खाना मस्जिद में एक जमाअ़त

www.dawateislami.net

के साथ खाए और उगालदान मस्जिद में रखे और घोड़े की ज़ीन और अस्बाब वग़ैरा मस्जिद में रखे येह सब शरअ़ से दुरुस्त है या नहीं। بَیِّنُوْا تُؤْجَرُوْا (बयान कीजिये अज्र दिये जाएंगे।)

जवाब : मस्जिद में सोना, खाना, ब ह़ालते ए'तिकाफ़ जाइज़ है, अगर एक जमाअ़त मो'तकिफ़ हो तो मिल कर खा सकते हैं, बहर ह़ाल येह लाज़िम है कि कोई चीज़ शोरबा या शीर (दूध) वग़ैरा की छींट मस्जिद में न गिरे। और सिवाए ह़ालते ए'तिकाफ़ मस्जिद में सोना या खाना दोनों मकरूह हैं, ख़ास कर एक जमाअ़त के साथ कि मकरूह फ़े'ल का और लोगों को भी इस में मुर्तकिब बनाना है। आ़लमगीरी में है : يُكْرَهُ النَّوْمُ وَالْاَكْلُ فِيْهِ لِغَيْرِ الْمُعْتَكِفِ[1] या'नी मस्जिद में सोना और खाना ग़ैर मो'तकिफ़ के लिये मकरूह है। मस्नद लगाना अगर बराहे तकब्बुर है तो येह ख़ारिजे मस्जिद भी ह़राम है। **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है :

اَلَیْسَ فِیْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِیْنَ ﴿۶۰﴾ (پ۲۴، الزمر: ۶۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क्या मग़रूर का ठिकाना जहन्नम में नहीं ?

और अगर बराहे तकब्बुर नहीं किसी दूसरे ने इस के लिये रख दी येह उस की ख़ातिर से बदीं लिह़ाज़ (इस बात का लिह़ाज़ करते हुवे) कि अमीरुल मोअमिनीन मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : لَا يَاْبَى الْكَرَامَةَ اِلَّا حِمَارٌ[2] या'नी "इ़ज़्ज़तो एह़तिराम का इन्कार कोई गधा ही कर सकता है।" टेक लगा कर बैठ गया तो भी येह मस्जिद में न होना चाहिये कि अदबे मस्जिद के ख़िलाफ़ है। हां ! ज़ो'फ़ या दर्द के सबब

1...فتاوىٰ هندية، كتاب الكراهية، الباب الخامس فى آداب المسجد...الخ، ۵/۳۲۱

2...فردوس الاخبار، ۲/۴۴۹، حديث: ۷۹۸۰

www.dawateislami.net

मजबूर हो तो मा'ज़ूर है। उगालदान अगर पीक के लिये रखा है तो ग़ैर मो'तकिफ़ को मस्जिद में पान खाना ख़ुद मकरूह है और अगर खांसी है, बलग़म बार बार आता है इस ग़रज़ के लिये रखा तो ह़रज नहीं। और घोड़े का ज़ीन वग़ैरा अस्बाब भी बिला ज़रूरते शरइ़य्या मस्जिद में रखना न चाहिये, मस्जिद को घर के मुशाबे भी करना न चाहिये। रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : اِنَّ الْمَسَاجِدَ لَمْ تُبْنَ لِهٰذَا "मसाजिद इन चीज़ों की ख़ातिर नहीं बनाई जातीं।"[1] ख़ुसूसन अगर (ऐसी) चीज़ें रखे जिन से नमाज़ की जगह रुके तो सख़्त ना जाइज़ व गुनाह है। قال اللہ تعالٰی

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ مَسٰجِدَ اللّٰهِ اَنْ يُّذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ

(پ۱، البقرۃ:۱۱۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जो **अल्लाह** की मस्जिदों को रोके इन में नामे ख़ुदा लिये जाने से।

अ़वाम के लिये नसीह़त के मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यहां तक तो आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت ने सुवाल में मौजूद तमाम बातों की मुख़्तलिफ़ सूरतें और अह़काम बयान फ़रमा दिये मगर चूंकि सुवाल में आ़लिम का भी ज़िक्र था इस लिये अ़वाम को उ़लमा पर ए'तिराज़ से बचाने के मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त कुछ इस त़रह़ नेकी की दा'वत दी :

1...مسلم، کتاب المساجد و مواضع الصلاۃ، باب النھی عن نشد... الخ، ص۲۸۴، حدیث:۵۶۸

www.dawateislami.net

बाईं हमा (इन तमाम अह़काम के बा वुजूद) येह भी याद रखना फ़र्ज़ है कि ह़क़ीक़तन आ़लिमे दीन, हादिये ख़ल्क़, सुन्नी सह़ीहुल अ़क़ीदा हो अ़वाम को इस पर ए'तिराज़, इस के अफ़्आ़ल में नुक्ता चीनी, इस की ऐ़ब बीनी ह़राम, ह़राम, ह़राम और बाइ़से सख़्त महरूमी और बद नसीबी है। अव्वल तो लाखों मसाइल व अह़काम फ़र्क़े निय्यत से मुतबद्दिल (तब्दील) हो जाते हैं। रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ وَاِنَّمَا لِكُلِّ امْرِئٍ مَا نَوٰى आ'माल का मदार निय्यतों पर है और हर शख़्स के लिये वोही है जिस की उस ने निय्यत की।[1]

इ़ल्मे निय्यत एक अ़ज़ीम वासेअ़ इ़ल्म है जिसे उ़लमाए माहिरीन ही जानते हैं। अ़वाम बेचारे फ़र्क़ पर मुत्त़लअ़ न हो कर इन के अफ़्आ़ल को अपनी ह़रकात पर क़ियास करते और हुक्म लगा देते और کارِ پاکاں را قیاس از خود مگیر के मौरद बनते हैं (इस लाइक़ हैं कि इन को कहा जाए कि अच्छों के कामों को अपने ऊपर क़ियास मत करो)। इसी मस्अले में देखिये, शरअ़न ए'तिकाफ़ के लिये न रोज़ा शर्त़ है न किसी क़दर मुद्दत की ख़ुसूसिय्यत, व लिहाज़ा मुस्तह़ब है कि आदमी जब मस्जिद में जाए ए'तिकाफ़ की निय्यत कर ले। जब तक मस्जिद में रहेगा ए'तिकाफ़ का सवाब भी पाएगा। उ़लमा ए'तिकाफ़ ही की निय्यत से मस्जिद में दाख़िल होते हैं, और अब इन को सोना, खाना, पीक के लिये उगालदान रखना रवा (जाइज़) होगा, और इस से क़त़्ए़ नज़र भी हो तो "जाहिल को सुन्नी आ़लिम पर ए'तिराज़ नहीं पहुंचता।"

1...بخاری، کتاب بدء الوحی، باب کیف کان بدء الوحی، ۱/۵، حدیث: ۱

www.dawateislami.net

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़दीस में आ़लिमे बे अ़मल की मिसाल शम्अ़ से दी है कि आप जले और तुम्हें रोशनी व नफ़्अ़ पहुंचाए ।[1] अह़मक़ वोह (है) जो उस के जलने के बाइ़स उसे बुझा देना चाहे इस से येह ख़ुद ही अन्धेरे में रह जाएगा ।[2]

दो रक्अ़तें 70 रक्अ़तों से अफ़्ज़ल

इसी त़रह़ पन्दरहवीं सदी की अ़ज़ीम इ़ल्मी व रूह़ानी शख़्सिय्यत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه बिल ख़ुसूस दा'वते इस्लामी वालों और बिल उ़मूम तमाम मुसलमानों को वक़्तन फ़ वक़्तन उ़लमाए अहले सुन्नत की ता'ज़ीम करने और इन पर ए'तिराज़ से बचने का ज़ेह्न देते रहते हैं । जैसा कि आप फ़रमाते हैं : "इस्लाम में उ़लमाए ह़क़ की बहुत ज़ियादा अहम्मिय्यत है और वोह इ़ल्मे दीन के बाइ़स अ़वाम से अफ़्ज़ल होते हैं" ग़ैर आ़लिम के मुक़ाबले में आ़लिम को इ़बादत का सवाब भी ज़ियादा मिलता है, चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़ली رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है : आ़लिम की दो रक्अ़त ग़ैरे आ़लिम की सत्तर रक्अ़त से अफ़्ज़ल है ।[3] लिहाज़ा दा'वते इस्लामी के तमाम वाबस्तगान बल्कि हर मुसलमान के लिये ज़रूरी है कि वोह उ़लमाए अहले सुन्नत से हरगिज़ न टकराएं, इन के अदबो एह़तिराम में कोताही न करें, उ़लमाए अहले सुन्नत की तह़क़ीर से क़त़्अ़न गुरेज़ करें । बिला इजाज़ते

1...معجم کبیر، ۲/۱۶۶، حدیث: ۱۶۸۱

2....फ़तावा रज़विय्या, 8/97

3...جامع صغیر، ص ۲۷۴، حدیث: ۴۴۷۶

www.dawateislami.net

शरई इन के किरदार और अ़मल पर तन्क़ीद कर के ग़ीबत का गुनाहे कबीरा, ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम न करें।"[1]

आ़लिम की ग़ीबत करने वाला रह़मत से मायूस

अफ़्सोस ! आज कल مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ उ़लमा की ब कसरत ग़ीबत की जाती है। लिहाज़ा शैत़ान किसी आ़लिमे दीन की ग़ीबत पर उभारे तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़फ़्स कबीर عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَدِیْر के इस इरशाद को याद कर के ख़ुद को डराइये : जिस ने किसी फ़क़ीह (आ़लिम) की ग़ीबत की तो क़ियामत के रोज़ उस के चेहरे पर लिखा होगा : "येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मायूस है।"[2]

सारे सुन्नी आ़लिमों से तू बना कर रख सदा
कर अदब हर एक का होना न तू इन से जुदा

उ़लमा की तौहीन के ह़यासोज़ अन्दाज़

अमीरे अहले सुन्नत फ़रमाते हैं : आज कल बा'ज़ लोग बात बात पर उ़लमाए किराम के बारे में तौहीन आमेज़ कलिमात बक दिया करते हैं, मसलन कहते हैं : भई ज़रा बच कर रहना 'अ़ल्लामा साह़िब' हैं, उ़लमा लालची होते हैं, हम से जलते हैं, हमारी वजह से अब इन का कोई भाव नहीं पूछता, छोड़ो छोड़ो ! येह तो मौलवी है। (مَعَاذَاللہ आ़लिमों को बा'ज़ लोग ह़क़ारत से कह देते हैं) येह मुल्ला लोग, उ़लमा ने (مَعَاذَاللہ) सुन्निय्यत का कोई काम नहीं किया। (बा'ज़ अवक़ात मुबल्लिग़ का बयान सुन कर ना पसन्दीदगी का इज़्हार करते हुवे مَعَاذَاللہ कह दिया जाता है) फ़ुलां का अन्दाज़े बयान तो मौलवियों वाला है वग़ैरा वग़ैरा।

1.....तआ़रुफ़े दा'वते इस्लामी, स. 49

2...مکاشفۃ القلوب، باب فی بیان الغیبۃ، ص ۱۷

www.dawateislami.net

आ़लिम की तौहीन कब कुफ़्र है और कब नहीं ?

आ़लिम की तौहीन की तीन सूरतें और इन के बारे में हुक्मे शरई बयान करते हुवे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या जिल्द 21 सफ़ह़ा 129 पर फ़रमाते हैं :

(1) अगर आ़लिमे (दीन) को इस लिये बुरा कहता है कि वोह आ़लिम है जब तो सरीह़ काफ़िर है और (2) अगर ब वजहे इ़ल्म उस की ता'ज़ीम फ़र्ज़ जानता है मगर अपनी किसी दुन्यवी ख़ुसूमत (दुश्मनी) के बाइ़स बुरा कहता है गाली देता (है और) तह़क़ीर करता है तो सख़्त फ़ासिक़ फ़ाजिर है और (3) अगर बे सबब (बिला वजह) रन्ज (बुग़्ज़) रखता है तो मरीज़ुल क़ल्ब व ख़बीसुल बातिन (दिल का मरीज़ और नापाक बातिन वाला है) और इस (ख़्वाह मख़्वाह बुग़्ज़ रखने वाले) के कुफ़्र का अन्देशा है । ख़ुलासा में है : ''مَنْ اَبْغَضَ عَالِماً مِنْ غَيْرِ سَبَبٍ ظَاهِرٍ خِيْفَ عَلَيْهِ الْكُفْرُ'' या'नी जो बिला किसी ज़ाहिरी वजह के आ़लिमे दीन से बुग़्ज़ रखे उस पर कुफ़्र का ख़ौफ़ है ।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हम में से हर शख़्स को उ़लमा की तौहीन से बचना चाहिये अगर مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ किसी ने माज़ी में अपने क़ौल या फ़े'ल से आ़लिम की ब सबबे इ़ल्मे दीन तौहीन कर डाली हो तो वोह तौबा व तजदीदे ईमान करे और अगर शादीशुदा हो तो तजदीदे निकाह़ और किसी का मुरीद हो तो तजदीदे बैअ़त भी करे । आइये ईमान की हिफ़ाज़त की ख़ातिर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले

1....कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 344

www.dawateislami.net

सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की किताब **कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब** से शरीअ़त और उ़लमाए दीन की तह़क़ीर के बा'ज़ कुफ़्रिय्या कलिमात की मिसालें मुलाह़ज़ा कीजिये।

उ़लमाए दीन की तौहीन की मिसालें

1. येह कहा : "मैं शरअ़ वरअ़ नहीं जानता" या कहा : "मैं शरीअ़त का क्या करूं ?" दोनों कुफ़्रिय्यात हैं।

2. जो कहे : "उ़लमा जो इ़ल्म सिखाते हैं मह्ज़ क़िस्से कहानियां है" या "ख़्वाहिशात हैं" या "मह्ज़ धोका हैं" या कहा : "मैं ह़ीलों के इ़ल्म का मुन्किर हूं।" येह तमाम कुफ़्रिय्या कलिमात हैं।

3. जिस ने तौहीन की निय्यत से किसी आ़लिमे बर ह़क़ का सह़ीह़ फ़तवा ज़मीन पर फेंका या कहा : "शरीअ़त क्या है !" दोनों चीज़ें कुफ़्र हैं।[1]

4. 'मौलवी लोग क्या जानते हैं' कहना कुफ़्र है। जब कि उ़लमा की तह़क़ीर मक़्सूद हो।

5. "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दीन को आसान उतारा था मगर मौलवियों ने मुश्किल बना दिया।" येह उ़लमा की तौहीन की वजह से कलिमए कुफ़्र है। क्यूंकि फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : اَلْاِسْتِخْفَافُ بِالْاَشْرَافِ وَالْعُلَمَاءِ كُفْرٌ या'नी अशराफ़ (सादाते किराम) और उ़लमा की तह़क़ीर (इन्हें घटिया जानना) कुफ़्र है।

6. "जितने मौलवी हैं सब बद मुआ़श हैं" कहना कुफ़्र है जब कि ब सबबे इ़ल्मे दीन उ़लमाए किराम की तह़क़ीर की निय्यत से कहा हो।

1....कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 340 ता 341 मुल्तक़त़न

www.dawateislami.net

7. येह कहना "आ़लिम लोगों ने देस ख़राब कर दिया।" कलिमए कुफ़्र है।

8. येह कहना कुफ़्र है कि "मौलवियों ने दीन के टुकड़े टुकड़े कर दिये।"

9. जो कहे : "इ़ल्मे दीन को क्या करूंगा ! जेब में रूपे होने चाहियें।" कहने वाले पर हुक्मे कुफ़्र है।

10. किसी ने आ़लिम से कहा : "जा और इ़ल्मे दीन को किसी बरतन में संभाल कर रख।" येह कुफ़्र है।

याद रहे ! सिर्फ़ उ़लमाए अहले सुन्नत ही की ता'ज़ीम की जाएगी। रहे बद मज़हब उ़लमा, तो उन के साए से भी भागे कि उन की ता'ज़ीम ह़राम, इन का बयान सुनना, इन की कुतुब का मुत़ालआ़ करना और इन की सोह़बत इख़्तियार करना ह़राम और ईमान के लिये ज़ह़रे हलाहल है।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इ़ल्मे दीन से दूरी के सबब बा'ज़ लोग مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ येह तक कहते सुनाई देते हैं कि "मौलवियों को तो कुफ़्र के फ़तवे देने के सिवा कोई काम ही नहीं।" ऐसे लोगों की इस्लाह़ के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने सुवाल जवाब के अन्दाज़ में कुछ मदनी फूल अ़त़ा फ़रमाए हैं, चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 692 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब सफ़ह़ा 656 पर है :

1....कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 354 ता 359 मुल्तक़त़न

www.dawateislami.net

जब देखो कुफ़्र का फ़तवा दाग़ देते हैं !

सुवाल : अगर कोई येह किताब 'कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब' पढ़ने के बा'द यूं कहे कि मौलवियों को तो कुफ़्र के फ़तवे देने के सिवा कोई काम ही नहीं, जब देखो कुफ़्र का फ़तवा दाग़ देते हैं ! ऐसे शख़्स के लिये कुछ मदनी फूल दे दीजिये ।

जवाब : इस त़रह़ के तअस्सुरात का इज़्हार यक़ीनन दीन से दूरी का नतीजा है । इसी दूरी ने बा'ज़ लोगों को बे बाक बना दिया है, वोह उ़लमाए दीन की ह़क़ीक़त ही नहीं समझते, उन्हें इतना भी एह़सास नहीं कि आख़िर वोह किन हस्तियों की इ़ज़्ज़त व नामूस पर ह़म्ला कर रहे हैं ? किन के ख़िलाफ़ दिल की भड़ास निकाल रहे हैं ? उन के ख़िलाफ़ जिन को दीन में सुतून की हैसिय्यत ह़ासिल है, जो दीन के मुह़ाफ़िज़ हैं । ला रैब व शक ! उ़लमाए दीन बहुत बड़ी शानों के मालिक हैं, उन की मुख़ालफ़त सबबे हलाकत और उन की इत़ाअ़त दोनों जहां के लिये बाइ़से सआ़दत है । चुनान्चे, पारह 5 सूरतुन्निसा आयत नम्बर 59 में इरशादे रब्बुल इबाद है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَ اُولِي الْاَمْرِ مِنْكُمْۚ (پ۵، النساء:۵۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो हुक्म मानो अल्लाह का और हुक्म मानो रसूल का और उन का जो तुम में हुकूमत वाले हैं ।

www.dawateislami.net

उ़लमा की इता़अ़त रसूल की इता़अ़त है

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ा़न عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस आयते करीमा के तह़्त फ़रमाते हैं : 'ख़्वाह दीनी हुकूमत वाले हों जैसे आ़लिम, मुर्शिदे कामिल, फ़क़ीह, मुज्तहिद या दुन्यावी हुकूमत वाले जैसे इस्लामी सुल्ता़न और इस्लामी हुक्काम । लेकिन दीनी हुक्काम की इता़अ़त दुन्यावी हुक्काम पर भी वाजिब होगी, मगर इन दोनों की इता़अ़त में येह शर्त़ है कि नस के ख़िलाफ़ हुक्म न दें वरना इन की इता़अ़त नहीं ।' मज़ीद फ़रमाते हैं : 'फ़ुक़हा की त़रफ़ रुजूअ़ करना भी रसूल ही की त़रफ़ रुजूअ़ करना है क्यूंकि फ़ुक़हा हु़ज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام ही का हुक्म सुनाते हैं, जैसे हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इता़अ़त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इता़अ़त है ऐसे ही आ़लिमे दीन की फ़रमां बरदारी रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी है ।'[(1)]

सुवाल में मज़्कूर ए'तिराज़ में बिला तख़सीस (بِلا۔تَخ۔صِیص किसी को ख़ास किये बिग़ैर) मुत़लक़न येह बात कही गई है कि मौलवियों को तो कुफ़्र का फ़तवा देने के सिवा कोई काम ही नहीं....الخ **مَعَاذَ الله** عَزَّوَجَلَّ ख़ुद येह जुम्ला इन्तिहाई सख़्त है, इस में उ़लमाए दीन की तौहीन का पहलू वाज़ेह़ है बल्कि उ़लमाए दीन की तौहीन ही मक़्सूद हो तो खुला कुफ़्र व इर्तिदाद है । रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : 'तीन शख़्स के ह़क़ को हल्का न जानेगा मगर मुनाफ़िक़ खुला मुनाफ़िक़, एक वोह जिसे इस्लाम में बुढ़ापा आया, दूसरा इ़ल्म वाला, तीसरा आ़दिल बादशाह ।'[(2)]

1....नूरुल इरफ़ान, स. 137

2...معجم کبیر، ۸/۲۰۲، حدیث: ۷۸۱۹

www.dawateislami.net

उ़लमाए दीन की तौहीन संगीन जुर्म है

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ जिल्द 23 सफ़ह़ा 649 पर उ़लमाए दीन की तौहीन करने से मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं : 'सख़्त ह़राम, सख़्त गुनाह, अशद्द कबीरा । आ़लिमे दीन सुन्नी सह़ीहुल अ़क़ीदा कि लोगों को ह़क़ की त़रफ़ बुलाए और ह़क़ बात बताए मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नाइब है । इस की तह़क़ीर (तौहीन) مَعَاذَاللہ मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तौहीन है और मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जनाब में गुस्ताख़ी मूजिबे ला'नते इलाही व अ़ज़ाबे अलीम है ।'[1]

शैत़ान लोगों को आ़लिमों से क्यूं दूर करता है ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शैत़ान लोगों के दिलों से उ़लमाए दीन की वक़्अ़त निकालना चाहता है ताकि उ़लमाए किराम जब किसी बात को **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ और मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नाफ़रमानी व मा'सिय्यत क़रार दें तो लोग उन की नसीह़त पर कान न धरें और बे धड़क शैत़ानी कामों में लगे रहें । वाक़ेई बड़ा नाज़ुक मुआ़मला है, बद क़िस्मती से आज ईमान की सलामती की सोच में कमी और ज़बान की बे एह़तियात़ियों में ज़ियादती होती जा रही है जिस के नतीजे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में गुस्ताख़ी,

---

1.... फ़तावा रज़विय्या, 23/649

www.dawateislami.net

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में बे अदबी और ज़रूरियाते दीन के इन्कार पर मुश्तमिल त़रह़ त़रह़ के कुफ़्रिय्यात रोज़ मर्रह की गुफ़्तगू में बोले जाते हैं। और जब उ़लमाए दिन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन किसी क़ौल पर कोई हुक्मे शरई़ बयान करें तो مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ कहा जाता है "जनाब इन को जब देखो हुक्म लगाना आता है।"

याद रखिये ! जिस त़रह़ हर मुल्क, हर रियासत के कुछ क़ानून होते हैं जिन का मक़्सद जराइम की रोक थाम है येही वजह है कि क़ानून शिकनी एक जुर्म शुमार किया जाता है और ख़िलाफ़ वर्ज़ी करने वाले पर सज़ा का तअ़य्युन होता है। अब अगर कोई शख़्स क़ानून के रखवाले किसी ज़िम्मेदार पर ए'तिराज़ करते हुवे कहे कि येह तो जब देखो सज़ा सुनाता रहता है तो यक़ीनन ऐसे शख़्स को लोग बे वुक़ूफ़ कहेंगे और उस से यही कहेंगे कि इस को बुरा मत कहो ! बल्कि जराइम के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाओ क्यूंकि सज़ा सुनाने में इस ज़िम्मेदार का कोई क़ुसूर नहीं, जराइम होते हैं तो येह फ़ैसले सुनाता है अगर जराइम ही ख़त्म हो जाएं तो सज़ा के फ़ैसले भी ख़त्म हो जाएं। इसी त़रह़ इस्लाम ने भी अपने मानने वालों की दुन्या व आख़िरत बेहतर बनाने के लिये कुछ उसूल व क़वानीन मुक़र्रर फ़रमाए हैं और इस के भी कुछ मुह़ाफ़िज़ व ज़िम्मेदार हैं जो कि ख़िलाफ़ वर्ज़ी करने वालों पर हुक्मे शरअ़ सादिर फ़रमाते हैं। अगर कोई चाहता है कि उस पर हुक्म लगना बन्द हो जाए तो वोह शरीअ़त की ख़िलाफ़ वर्ज़ी से बाज़ आ जाए न कि उ़लमा को बुरा भला कह कर अपनी आख़िरत बरबाद करे।

www.dawateislami.net

उ़लमा के बिग़ैर इस्लाम का निज़ाम नहीं चल सकता

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : "उ़लमाए इस्लाम का काम तो **अल्लाह** रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल, शहनशाहे अम्बियाए किराम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पैग़ाम को दुरुस्त त़रीक़े पर आ़म फ़रमाना है, उ़लमाए दीन तो शरीअ़त के क़वानीन के मुह़ाफ़िज़ीन हैं । उ़लमाए किराम तो दीने इस्लाम के अह़काम के मुत़ाबिक़ ही किसी चीज़ को ह़लाल या ह़राम, कुफ़्र या इस्लाम क़रार देने के पाबन्द हैं । अपनी त़रफ़ से हरगिज़ कुछ नहीं कहते, येही इन का मन्सब है । यक़ीनन उ़लमाए दीन ही की बरकतों, कोशिशों, इ़ल्मी काविशों और मुसाइ़ये तब्लीग़ से गुलज़ारे इस्लाम की बहारें हैं । उ़लमाए ह़क़ ही की बदौलत गुलशने इस्लाम हरा भरा लह लहा रहा है । अगर उ़लमा ही मा'दूम (या'नी ख़त्म) हो जाएं तो कुफ़्फ़ार को इस्लाम की दा'वत कौन देगा ? कुफ़्फ़ार की त़रफ़ से उठाए जाने वाले ए'तिराज़ात के मुस्कित (या'नी ख़ामोश कर देने वाले) जवाबात कैसे दिये जा सकेंगे ? आ़म्मतुल मुस्लिमीन को अरकाने इस्लाम की ता'लीम देने की तरकीब कैसे बनेगी ? उन्हें क़ुरआनो ह़दीस के रुमूज़ (या'नी भेदों) से कौन आश्ना (वाक़िफ़) करेगा ?"

ज़बान को क़ाबू में रखिये !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बे नियाज़ी और उस की ख़ुफ़्या तदबीर से हर मुसलमान को लर्ज़ां व तरसां रहना चाहिये, न जाने कौन सी मा'सिय्यत (या'नी नाफ़रमानी) **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त के क़ह्रो ग़ज़ब को उभार दे और ईमान के लिये ख़त़रा पैदा हो जाए । बस हर वक़्त अपने रब तआ़ला के आगे आ़जिज़ी का

www.dawateislami.net

मुज़ाहरा करते रहिये । ज़बान को क़ाबू में रखिये कि ज़ियादा बोलते रहने से भी बा'ज़ अवक़ात मुंह से कलिमाते कुफ़्र निकल जाते हैं और पता नहीं लगता, हर वक़्त ईमान की हिफ़ाज़त की फ़िक्र करते रहना ज़रूरी है।

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن का इरशाद है : उ़लमाए किराम फ़रमाते हैं : "जिस को सल्बे ईमान का ख़ौफ़ न हो मरते वक़्त उस का ईमान सल्ब हो जाने का अन्देशा है।"(1)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम सब को ईमान की फ़िक्र नसीब फ़रमाए और उ़लमा का अदब करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

उ़लमा के लिये मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने उ़लमा के ह़क़ में अ़वाम को जो मदनी फूल अ़ता फ़रमाए वोह और इस के ज़िम्न में चन्द बातें आप ने मुलाह़ज़ा कीं मज़ीद इसी फ़तवे में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अ़वाम की ख़ैर ख़्वाही करते हुवे इन के ह़क़ में उ़लमा के लिये भी कुछ मदनी फूल अ़ता फ़रमाए हैं, चुनान्चे, आप फ़रमाते हैं : "उ़लमा को चाहिये कि अगर्चे ख़ुद निय्यते सह़ीह़ा रखते हों अ़वाम के सामने ऐसे अफ़्आ़ल जिन से इन का ख़याल परेशान हो न करें कि इस से दो फ़ितने हैं : (1) जो मो'तक़िद नहीं उन का मो'तरिज़ होना, ग़ीबत की बला में

1....मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 495

www.dawateislami.net

पड़ना, आ़लिम के फ़ैज़ से महरूम रहना । (2) और जो मो'तक़ीद हैं उन का इस के अफ़्आ़ल को दस्तावेज़ बना कर बे इ़ल्मे निय्यत ख़ुद मुर्तकिब होना । आ़लिम फ़िर्क़ए मलामतिय्या से नहीं कि अ़वाम को नफ़रत दिलाने में इस का फ़ाइदा हो (बल्कि) मस्नदे हिदायत पर है, अ़वाम को अपनी त़रफ़ रग़बत दिलाने में इन का नफ़्अ़ है ।"

ह़दीस में है : "**अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) पर ईमान के बा'द सब से बड़ी अ़क़्लमन्दी लोगों के साथ महब्बत करना है ।"[1]

दूसरी ह़दीसे सह़ीह़ में है : रसूलुल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं : بَشِّرُوْا وَلَا تُنَفِّرُوْا या'नी ख़ुश ख़बरी सुनाओ और (लोगों को) नफ़रत न दिलाओ ।[2]

अह़यानन (इत्तिफ़ाक़न) ऐसे अफ़्आ़ल की ह़ाजत हो तो ए'लान के साथ अपनी निय्यत और मस्अलए शरीअ़त अ़वाम को बता दे । وَاللهُ تَعَالٰى اَعْلَمُ[3]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने अ़वाम की किस क़दर ख़ैर ख़्वाही फ़रमाई कि आ़लिम को अ़वाम के सामने कोई भी ऐसा काम करने से मन्अ़ फ़रमा दिया जिसे देख कर जो लोग अ़क़ीदत मन्द नहीं वोह बद गुमानी, तजस्सुस और ग़ीबत वग़ैरा ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाले काम में पड़ जाएं और जो अ़क़ीदत मन्द हैं वोह ब सबबे अ़क़ीदत इस काम में आ़लिम की पैरवी करें लेकिन चूंकि वोह आ़लिम

1...شعب الایمان، باب فی حسن الخلق، فصل طلاقۃ الوجہ...الخ، ۶/۲۵۵، حدیث: ۸۰۶۱

2...بخاری، کتاب العلم، باب ما کان النبی یتخولہم بالموعظۃ...الخ، ۱/۴۲، حدیث: ۶۹

3.... फ़तावा रज़विय्या, 8/98

www.dawateislami.net

की निय्यत से वाक़िफ़ नहीं लिहाज़ा उन के गुनाह में पड़ने का अन्देशा हो, इस त़रह़ एक मुसलमान को मुतवक़्क़ेअ़ गुनाहों से बचाने के लिये उ़लमा को उन के सामने एह़तियात़ करने की नसीह़त फ़रमाई जिस में यक़ीनन अ़वाम की ज़बरदस्त ख़ैर ख़्वाही है।

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इन बातों का बहुत लिहाज़ रखते हैं येही वजह है कि आप ह़स्बे मौक़अ़ न सिर्फ़ अपने मुरीदीन व मुह़िब्बीन को मुख़्तलिफ़ कामों की निय्यतें सिखाते और करवाते रहते हैं बल्कि बारहा ख़ुद किसी काम को करने से पहले भी उन पर अपनी निय्यत का इज़्हार फ़रमा देते हैं ताकि उन्हें अच्छी अच्छी निय्यतों की मा'लूमात फ़राहम करने के साथ साथ ज़ेह्न में पैदा होने वाले मुमकिना वस्वसे से भी बचाया जा सके। जैसा कि

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का अ़मल

एक मरतबा अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه चन्द इस्लामी भाइयों के साथ जल्वा गर थे, इसी अस्ना में आप ने अपने पास रखी हुई पानी की बोतल से गिलास में पानी लिया और खड़े हो गए, चूंकि दीगर इस्लामी भाई भी मौजूद थे लिहाज़ा मुमकिना वस्वसे के पेशे नज़र अमीरे अहले सुन्नत ने पानी पीने से पहले ह़ाज़िरीन से फ़रमाया : **"येह ज़म ज़म शरीफ़ है इस लिये खड़े हो कर पी रहा हूं।"** फिर पानी नोश फ़रमाया।

हुस्ने ज़न इख़्तियार कीजिये !

याद रहे ! कि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का येह त़र्ज़े अ़मल कि वोह अ़वाम को वस्वसों से बचाते हैं हर आ़लिम, पीर या उस

www.dawateislami.net

शख़्स के जिस की लोग इक़्तिदा करते हैं मन्सब का तक़ाज़ा है मगर लोगों पर भी लाज़िम है कि ऐसी हस्तियों के मुआ़मले में वस्वसे या बद गुमानी में न पड़े, आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحمَةُ رَبِّ الْعِزَّت मुरीद को अपने पीर के बारे में हुस्ने ज़न की ताकीद करते हुवे फ़रमाते हैं : "इस की जो बात अपनी नज़र में ख़िलाफ़े शरअ़ बल्कि مَعَاذَاللّٰه कबीरा मा'लूम हो उस पर भी न ए'तिराज़ करे न दिल में बद गुमानी को जगह दे बल्कि यक़ीन जाने कि मेरी समझ की ग़लती है।"(1)

महफ़ूज़ सदा रखना शहा ! बे अदबों से
और मुझ से भी सरज़द न कभी बे अदबी हो

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारे ह़ाले ज़ार पर करम फ़रमाए, हमारे दिल में अपनी, अपने प्यारे महबूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की और उ़लमा व मशाइख़े अहले सुन्नत की महब्बत दाख़िल फ़रमाए और ईमान पर ख़ातिमा नसीब फ़रमाए। اٰمین بجاہِ النبی الامین صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وسلَّم

नेक सोह़बत का असर

फ़रमाने सूफ़ियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام : नेक सोह़बत सारी इबादात से अफ़्ज़ल है, देखो सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان सारे जहां के औलिया से अफ़्ज़ल हैं ! क्यूं ? इस लिये कि वोह सोह़बत याफ़्ता जनाबे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं। (मिरआतुल मनाजीह, 3/312)

1....फ़तावा रज़विय्या, 24/369

www.dawateislami.net

ماخذ و مراجع

نمبر شمار	کتاب	مصنف / مؤلف	مطبوعہ
1	قرآن پاک	کلام باری تعالیٰ	مکتبۃ المدینۃ ۱۴۳۲ھ
2	کنز الایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینۃ ۱۴۳۲ھ
3	نور العرفان	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفّٰی ۱۳۹۱ھ	پیر بھائی اینڈ کمپنی
4	روح البیان	مولی الروم شیخ اسماعیل حقی بروسی، متوفّٰی ۱۱۳۷ھ	داراحیاء التراث العربی بیروت
5	صحیح البخاری	امام محمد بن اسماعیل بخاری رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی علیہ، متوفّٰی ۲۵۶ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۹ھ
6	صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج قشیری نیشاپوری رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی علیہ، متوفّٰی ۲۶۱ھ	دار ابن حزم ۱۴۱۹ھ
7	سنن الترمذی	امام محمد بن عیسیٰ ترمذی رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی علیہ، متوفّٰی ۲۷۹ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
8	سنن النسائی	امام احمد بن شعیب نسائی رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی علیہ، متوفّٰی ۳۰۳ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۶ھ۔
9	المسند	امام ابو عبد اللہ احمد بن محمد بن حنبل رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی علیہ، متوفّٰی ۲۴۱ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
10	الجامع الصغیر	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفّٰی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۵ھ
11	جمع الجوامع	امام جلال الدین عبد الرحمن سیوطی شافعی، متوفّٰی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۱ھ
12	المعجم الکبیر	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی علیہ، متوفّٰی ۳۶۰ھ	داراحیاء التراث العربی ۱۴۲۲ھ

www.dawateislami.net

13	شعب الایمان	امام ابو بکر احمد بن حسین بیہقی رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی علیہ متوفّٰی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیہ ۱۴۲۱ھ
14	فردوس الاخبار	حافظ شیرویہ بن شہر دار بن شیرویہ دیلمی رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی علیہ متوفّٰی ۵۰۹ھ	دار الکتب العلمیہ ۱۴۰۶ھ
15	جامع بیان العلم	امام ابو عمر یوسف بن عبد اللہ ابن عبد البر القرطبی المالکی متوفّٰی ۴۶۳ھ	دار الکتب العلمیہ
16	تاریخ بغداد	حافظ ابو بکر احمد بن علی بن ثابت خطیب بغدادی رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی علیہ متوفّٰی ۴۶۲ھ	دار الکتب العلمیہ ۱۴۱۷ھ
17	تعلیم المتعلم	امام برہان الاسلام زرنوجی متوفّٰی ۴۶۳ھ	باب المدینہ کراچی
18	مکاشفۃ القلوب	حجۃ الاسلام امام محمد غزالی ۵۰۵ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
19	الموسوعۃ الفقھیۃ	وزارۃ الاوقاف والشؤن الاسلامیہ۔ الکویت	دار الصفوۃ مصر ۱۹۹۳ء
20	الدر المختار	محمد بن علی المعروف بعلاء الدین حصکفی، متوفّٰی ۱۰۸۸ھ	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
21	الفتاوی الھندیۃ	علامہ ہمام شیخ نظام متوفّٰی ۱۱۶۱ و جماعۃ من علماء الہند	دار الفکر بیروت ۱۳۰۳ھ
22	فتاوٰی رضویہ	امام اہلسنت احمد رضا خان متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن لاہور
23	ملفوظات اعلی حضرت	امام اہلسنت احمد رضا خان متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ ۱۴۳۰ھ
24	کفریہ کلمات کے بارے میں سوال جواب	شیخ طریقت شیخ طریقت، امیر اہلسنّت دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ	مکتبۃ المدینہ ۱۴۳۰ھ
25	تعارف دعوت اسلامی	المدینۃ العلمیہ	مکتبۃ المدینہ

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस

उ़नवान	सफ़हा	उ़नवान	सफ़हा
उ़लमा पर ए'तिराज़ मन्अ़ है	1	आ़लिम की ग़ीबत करने वाला रह़मत से मायूस	19
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	उ़लमा की तौहीन के ह़यासोज़ अन्दाज़	19
ईसाइया का बेटा	2	तौहीने उ़लमा कब कुफ़्र है और कब नहीं ?	20
ख़ुदा ने दो हाथ किस लिये दिये हैं !	3	उ़लमाए दीन की तौहीन की मिसालें	21
इ़ल्म की इ़ज़्ज़त	4	जब देखो कुफ़्र का फ़तवा दाग़ देते हैं !	23
उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का एह़तिराम	6	उ़लमा की इत़ाअ़त रसूल की इत़ाअ़त है	23
दीन के रहनुमा	7	उ़लमाए दीन की तौहीन संगीन जुर्म है	25
उ़लमा की शान में 7 फ़रामीन	8	शैत़ान उ़लमा से क्यूं दूर करता है ?	25
इ़ल्म के फ़ैज़ान में 4 अक़वाले बुज़ुर्गाने दीन	10	उ़लमा के बिग़ैर निज़ामे इस्लाम नहीं चल सकता	27
लम्ह़ए फ़िक्रिय्या !	12	ज़बान को क़ाबू में रखिये !	27
शुक्रिय्या के बारे में 2 फ़रामैन	13	उ़लमा के लिये मदनी फूल	28
दुन्यवी मोह़सिन का तो शुक्रिय्या लेकीन...	13	अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का अ़मल	30
उ़लमा से मुतअ़ल्लिक़ एक फ़तवा	14	हुस्ने ज़न इख़्तियार कीजिये !	30
अ़वाम के लिये नसीह़त के मदनी फूल	16	मआख़ज़ो मराजेअ़	32
दो रक्अ़तें 70 रक्अ़तों से अफ़्ज़ल	18	❁.....❁.....❁	

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عزوجل तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की अ़ालमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा 'रात मग़रिब की नमाज़ के बा 'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा 'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل

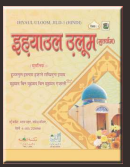

- अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
- मुम्बई :- 19 - 20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 022-23454429
- नागपुर :- सैफ़ी नगर रोड़, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, मोमिन पुरा, नागपुर, महाराष्ट्र, फ़ोन : 9326310099
- हैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

ISBN 978-969-631-127-0
0101666
MC-1266

MAKTABATUL MADINA
421, URDU MARKET, MATIA MAHAL, JAMA MASJID, DELHI - 1, PH : 011 - 23284560
E- mail : maktabadelhi@gmail.com web : www.dawateislami.net